# भजन

## तर्ज– गोरी है कलाईयां

अर्श से आईयां,हम फर्श पे आईयां, अपने धनी की धनयानियां
अपने पिऊ की प्यारी, भटक गई हैं सारी, सतगुरू आन जगाते
वाणी सुन सुन भागी, फिर भी ना रूह जागी
ऐसी भई माया की दीवानीयां

1–आये हैं आतम वल्लभ आये, छाये हैं दीद के आलम छाये
आज पधारे महबूब हमारे, तरस गये थे हम तो दरस को तिहारे
आज पिला दो,मदहोश बना दो, दे दो हमें इश्क की सुराहियां
अर्श से आईयां...
कायम सुराही बस मोमिनों ने पाई, इसे दूजा कोई क्यों कर पावे
जिसके ये ताले लिखा,उसने ये जाम चखा,मिट गई दिल की वीरानीयां
2–तुम सागर हम लहरें तिहारी, तुम सूरज हम किरणें तिहारी
सनमंध मेरा बस तुमसे जुड़ा है, इश्क से तेरे ये ख्वाब उड़ा है
जब मिली न्यामतें रूहानीयां
अर्श से आईयां...
लाड हमारे पूरे करने वाले, तुम रहते हो संग हमारे
हम तुम अंग संग,जैसे जल की तरंग, मिट गई सब तन्हाईयां
3–पहले आतम में तुमने तड़प जगाई, तड़प जगा कर इश्के आब पिलाई
तासीरे निसवत ये क्या रंग लाई,हो गई तेरी मस्तानीयां
अर्श से आईयां....
इश्क ने ऐसी प्यारी मस्ती पिलाई,पी के दुनियां से न्यारी हो गई
आंखों में बसे हो तुम,दिल में बैठे हो तुम
हो गई दूर हैरानीयां